فروری ۲۰۱۴ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰہِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

February 2014





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

सम्पादन समिति

- ➪ डॉ० अमानत हुसैन नक़वी
- ➪ वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- ➪ मौलाना महदी रज़ा, घोसी, मऊ
- ➪ मौलाना मुहम्मद जाफ़र कोपागंज
- ➪ मौलाना फ़ैज़ान जाफ़र अली
- ➪ मौलाना मोहम्मद रज़ा, मुबारकपूरी
- ➪ मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ➪ मोहम्मद आरिफ़ बस्तवी
- ➪ मिर्ज़ा मो० समद अब्बास
- ➪ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ➪ रेहान आलम, लखनऊ
- ➪ बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- ● **इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश**
- ● **कैफ़ तक़ी नक़वी, ब्यूरोचीफ़ देहली**

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

fo"k; lwph

फरवरी 2014ई०

रबीउल अव्वल व रबीउस्सानी 1435हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

y$kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
l Ei knu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

1fd'r %19,

छटा अध्याय

jkst k

रोज़े के मानी

अरबी में रोज़े के लिए सौम है जिसके डिक्शनरी में मानी 'सुम्त' यानी 'चुप्पी' के हैं। और इस मानी में हज़रत मरियम की ज़बानी क़ुरान मजीद में ज़िक्र है। '*इन्नी नज़रतु लिर्रहमानि सौमा*' इस के मानी ये हैं कि मैंने चुप रहने की मन्नत की है। सौम के दूसरे मानी परहेज़ करने (दूर रहने, रूकने) के हैं, मैं समझता हूँ कि पहले मानी पर भी सौम का इस्तेमाल इसी मानी के लेहाज़ से है। वह भी बात करने से परहेज़ करना और अपनी ज़बान को बात करने से रोकना है, इस लिए इसको 'सौम' कहते हैं। शरीयत ने इसी मानी को लेते हुए इसमें कुछ घेर और फैलाव के साथ पारिभाषिक (Termmological) मानी रखे ये हैं, और ऐसा ही शरीयत ने सारी चीज़ों में किया है।

जैसे सलात के क्या मानी थे? दुआ, लेकिन वह अब खुदा के यहां एक ख़ास तरह की गुज़ारिश (निवेदन) बन गयी, जो खड़े होने, बैठने, और रुकू और सजदों के साथ हो। यानि 'सलात' के मानी नमाज़ के हैं।

हज क्या था? इरादा, मन बनाना लेकिन अब वह ख़ास मक्का जाने का इरादा है, जो ख़ास तरीके के साथ काम करके पूरा किया जाय।

ज़कात क्या है? पाकी, शुद्ध होना, लेकिन अब वह माल में से एक ख़ास हिस्से (Quantity) के निकालने का नाम है जो माल को पाक करता है। इसी तरह 'सौम' (रोज़ा) के मानी दूर रहना, बचना, शब्द के माने के लेहाज़ से कुछ वाजिब चीज़ों को छोड़ना और कुछ मुस्तहब चीज़ों से दूर रहना भी, इसके लेहाज़ से सौम कहा जा सकता है। मगर शरीयत के लेहाज़ से कुछ ख़ास वक़्त में ख़ास चीज़ों का छोड़ना जिससे शरीयत ने उस वक़्त में मना किया है, वह ख़ास नीयत और इरादे के साथ सौम (रोज़ा) है और इस्लामी हैसियत से फ़र्ज़ (वाजिब अनिवार्य) किया है। और पूरे रमज़ान महीने के दिनों में इसे वाजिब किया है। इसके अलावा किसी दूसरी वजह से भी वाजिब हो सकता है। जैसे नज़र या कफ़्फ़ारह या क़सम वग़ैरह, लेकिन इस वक़्त हमारा मक़सद रमज़ान महीने के रोज़े के बारे में बयान करना है।

rhl jkst sD;ksa j[ks x;s\

''आख़िर इस्लाम में तीस दिन के लगातार रोज़े क्यों वाजिव किये है। क्या इसका मक़सद सिर्फ़ रूह को ऊचाई तक पहुँचाना है। अगर ऐसा है तो मुझे ये कहने की इजाज़त दीजिए की इस्लाम ने रूहानियत की धुन में माद्दियत (Materialism) से बिल्कुल आँखें बंद कर ली, जबकि ये ज़रूर है कि इस्लाम ने राहिब, ब्रहमचारी होने यानि शादी–ब्याह न करने और दुनिया को तज देने को बुरा कहा है और बियाहता ज़िन्दगी बिताने की तारीफ़ की है, लेकिन इसके अलावा इन्सानी ज़िन्दगी के दूसरे माद्दी (Material) पहलूओं से बड़ी हद तक ग़फ़लत बरती है।''

ये एतराज़ वाला वह सवाल जो मेरे सामने है इसके लिए मैं आगे चल कर रोज़े के वाजिब होने, के हुक्म, उसकी मसलहेत और फ़ायदा बयान करूँगा। लेकिन अभी एक बड़ी चर्चा ''रूहानियत और मदिदयत (Spiritualism & Materialism/आध्यात्मिकता

और भौतिकता) के बारे में करना चाहता हूँ। इस्लाम में इन दोनों का क्या रिशता है और इस्लाम ने कितना उनकी तरफ़ ध्यान दिया है।

ekfn~;r vkSj :gkfu;r dk foLrkj lsc;ku

जिस्म के बन्धन में जकड़े रहते हुए रूह का माद्दे के साथ ऐसा रिशता है कि एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और दोनों का इस तरह का लगाव है कि एक का असर दूसरे पर पड़ता है। रूहानी एहसास का असर जिस्म पर और जिस्म का असर रूह पर पड़ता है। रूह का असर शरीर पर खुला हुआ है जैसे डर रूह का एक एहसास है मगर इससे चेहरे पर पीलापन, आँखों का घूमना, होंठों में सूखापन, जिस्म में थरथराहट पैदा हो जाती है। और फिर जिस तरह का एहसास हो वैसा ही असर, अचानक धमाके का वक़्ती एहसास, इसका नतीजा उछल पड़ना और बराबर डर का असर, खास तरह से दिखाई देता है। ग़ुस्सा भी रूहानी एहसास है। इसका असर आँखों का लाल हो जाना चेहरे का तमतमाना, दाँतों का पीसना, नथनों का फूलना और तन–बदन का काँपना होता है। खुशी भी रूहानी हालत है। उसका असर चेहरे पर एक ख़ास तरह की हलकी सी लाली का दौड़ जाना, होठों पर मुस्कुराहट और ज़्यादा ठट्ठे की आवाज़ होना, हो जाता है।

ऐसे ही लाज, पछतावा और शर्म हर एक के लच्छन अलग–अलग हैं, वह जिस्म पर दिखाई देते हैं। ये है रूह के असर का जिस्म पर असर। अब रह गया जिस्म का रूह पर असर, ये भी ज़ाहिर सी बात है। अक्सर तबियत की ख़राबी, अक़्ल पर पड़ती है यानि बीमारी की हालत में तबियत में चिड़चिड़ापन पैदा हो जाना, बात–बात पर गुस्सा आना ये इस का एक छोटा सा नमूना है। जिगर की खराबी में सोने में बुरे बुरे सपने दिखाई देना इसी का नतीजा है कि शरीर की ख़राबी ने रूह के एहसास पर असर डाल दिया। मिराकी माली खूलिया (Melancholia) के रोगी के ख़यालों सोंच और समझ भी इसी का नतीजा है। आदमी की रूह उसके पैदा होने से आख़िर तक एक ही रहती है। पलना बढ़ना जिस्म की ख़ासियत है, रूह की नहीं है, मगर जिस्म के बढ़ने के साथ–साथ समझ में पक्कापन) पैदा होते रहना और फिर बुढ़ापे में अकसर वक़्तों में अक़्ल का बहक जाना भी इसकी दलील है कि इन्सान के जिस्म की ताक़त का असर रूह की ताक़त और अक़्ली एहसास पर पड़ता है।

मालूम हुआ कि इन्सान की रूह और उसके जिस्म में इस ज़िन्दगी में चोली दामन का साथ है। इसलिए एक के बढ़ने और ठीक रहने का असर दूसरे पर पड़ना ज़रूरी है।

आदमी रूह और जिस्म के एके का नाम है, इसलिए कामयाब मज़हब वह है जो इस समोये हुए आकार को बाक़ी रखते हुए आदमी को बढ़ने का मौक़ा दे और ज़िन्दगी के उसूल बताये।

ऐसा मज़हब जो उनमें से एक की बिल्कुल अनदेखी कर दे फ़ितरी (Natural/Practical) मज़हब नहीं समझा जा सकता। आदमी की ज़िन्दगी का मक़सद ये नहीं हो सकता कि उसकी रूह जिस्म से अलग हो जाय नहीं तो वह बच्चा जो माँ के पेट से पैदा होते ही दुनिया से चला गया वह अपनी ज़िन्दगी के मक़सद के लेहाज़ से सबसे ज़्यादा कामयाब समझा जायेगा मगर ऐसे में समझ में नहीं आता इसको दुनिया में आने ही की क्या ज़रूरत है? आदमी की रूह का कमाल तो समझ (बोध) और कर्म से पैदा हो सकता है। समझ यानी अक़ीदा (आस्था/विश्वास) और अ़मल यानी अच्छे काम और सेवा करना ही रूहानियत के कमाल के दो पहलू हो सकते हैं। मगर ये दोनों आदमी की शरीर की ताक़त (Physical Power) से जुड़े हैं। सोच और समझ दिमाग़ से और काम, कर्म जिस्म के हिस्सों (हाथ, पैर) से जुड़े हैं।

अब अगर रूहानियत की तरक़्क़ी के लिए उन जिस्म के हिस्सों (हाथ, पैर, वग़ैरह) को बेकार रखा गया तो वह खुद सोच समझ और कर्म जो रूहानी तरक्क़ी की वजह हैं कम हो जायेंगे। मिसाल के तौर पर ऐसा मज़हब जिसके नजदीक इबादत और रूहानी तपस्या का तरीक़ा ये है कि आदमी सांस रोक कर मुर्दो की तरह लेट जाय और उस मुर्दे की तरह की ज़िन्दगी से न दुनिया (खुदा के पैदा किये हुओं) की सेवा का कोई काम हो सकता है और न ही सोच समझ में तरक़्क़ी हो सकती है क्यों कि ये एक बेहोशी सा होगा जिसमें एहसास और समझ भी बेकार हो कर रह जायेंगे।

इसी तरह इबादत भक्ति का यह तरीक़ा कि आदमी अपने हाथ को सुखा डाले तो अब इस हाथ से अच्छे काम, जैसे गिरते हुए को सम्भालना, कमज़ोरों की

मदद करना, ग़रीबों की देख रेख, सब ख़त्म हो गये।

पैरों को सुन्न बना लिया तो बहुत से नेक काम जो पैरों से हो सकते थे, ख़त्म हो गये। फिर भला ये काम रूहानी तरक्क़ी का कारण कैसे समझा जा सकता है? मज़हबी शिक्षा वही सही शिक्षा हो सकती है जो भरपूर और हर पहलू पर छायी हो। अगर एक के लिए रूहानी तरक्क़ी का ज़रिया ये समझा जाये कि वह हाथ को सुखा ले तो सबके लिए ये रूहानी तरक़्क़ी का ज़रिया होगा। लेकिन ज़रा सोचिए कि अगर सभी इन्सान हाथों को रोक कर रूहानी तरक़्क़ी लेने लगे तो क्या फिर मानवता जीती रह सकती है और क्या कुछ ही दिनों में दुनिया आदमी से ख़ाली नहीं हो जाएगी?

अब देखिये कि रूह और जिस्म का मेल जिसका पहले बयान किया गया है सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत ताकत और उसके गठन का नतीजा है वरना रूह और जिस्म दो अलग (Opposite) चीज़ें हैं जिनके गुण और लच्छन बिल्कुल अलग हैं। एक है आसमान में उड़ने वाली (रूह) और दूसरा ज़मीन से लगा (जिस्म)।

ये सिर्फ़ खुदा की कुदरत का नतीजा है कि उनमें लगाव पैदा हो गया है। उसने उन दोनों को समो दिया है। इस लिए रूह में कुछ अपने ऊँचे दर्जे के गुणें को माद्दी (Physical) जिस्म की वजह से तज दिया और जिस्म ने कुछ अपने निचले गुणों को रूह के आने से बदल दिया। मगर इसके बाद भी उन दोनों के अपने अपने खास गुण और लच्छन अलग–अलग हैं। रूह का भोजन अलग है और जिस्म का खाना अलग हैं।

रूह को मारने वाला ज़हर कुछ और है और जिस्म को मारने वाला ज़हर कुछ और, चूँकि अब रूह और जिस्म दोनों को पालना पोसना ज़रूरी है इसलिए रूह को उसका खानपान पहुँचाना चाहिए और जिस्म को उसका खानपान, न इसकी अनदेखी की जा सकती है और न उसे मिट जाने के लिए छोड़ा जा सकता है, मगर याद रखें कि दो चीज़ें जिन का साथ होता है दो तरह की हो सकती हैं। एक ये कि दोनों बराबर की हैं। जैसे दो भाई जिन्होने बराबर की पूँजी से एक बराबर (Business) शुरू किया हो तो ज़ाहिर है फ़ायदा–नुक़सान में ये दोनों बराबर के साझी होगें और किसी एक का दूसरे से ज़्यादा ध्यान नहीं किया जा सकता।

दूसरी सूरत ये है कि एक का दर्जा ऊँचा हो और दूसरा उसके मुक़ाबले में नीचा हो। जिस तरह सवार और सवारी का, दोनों एक दूसरे की ज़रूरत हैं लेकिन सवार का खानपान अलग और सवारी का अलग होता है। एक जो उनको पालन का ज़िम्मेदार है उसे सवारी को उसका खानपान पहुँचाना चाहिए और सवार को उसका खानपान, लेकिन अगर दोनों की जरूरतों में टकराव हो जाय, एक ऐसा वक़्त आ जाए कि या तो सवारी की ज़िन्दगी का सामान इकट्ठा किया जाय या सवार का तो फिर सवार का सवारी से आगे होगा इसके मानी ये हैं कि सवारी का लेहाज़ उसी हद तक किया जाएगा जब तक सवार के लिए ख़तरा न पैदा हो। वरना मजबूरी में सवारी का ख़याल छोड़ना पड़ेगा।

इस्लाम के नज़दीक रूह और जिस्म की हैसियत यही है। रूह इसके नज़दीक बढ़ी हुई है, इसलिए रूह का पहला दरजा है और जिस्म का मर्तबा नीचा है इस लिए उसका दूसरा दरजा है।

मगर ये जिस्म इसी रूह की तरक़्क़ी का एक ज़रिया है। समझ लीजिए कि जिस्म रूह की सवारी है, इसलिए रूह की वजह से सही उस जिस्म की ज़रूरतों का ख़्याल रखना ज़रूरी है। लेकिन ये उस वक़्त तक जब तक कि रूह की ज़िन्दगी और उसके फ़ायदे से टकराव न हो लेकिन अगर ऐसा मौक़ा आ जाय कि जिस्म को खाना पहुँचाना रूह के लिए नुक़सान हो या मरने की वजह बन जाए तो जिस्म के नुक़सान की परवाह इस हद तक नहीं की जायेगी। इसी तरह अगर रूह की बाढ़ और उसकी तरक़्क़ी किसी ख़ास दर्जे तक जिस्म को तकलीफ़ पहुँचाने पर निर्भर हो तो उतनी तकलीफ़ को गवारा कर लिया जाएगा।

यूँ समझिए कि असली मक़सद जिस्म का पालना पोसना नहीं है बल्कि रूह के बाक़ी रखने और उसकी तरक़्की की वजह से है।

किसी का कहना है – "खुरदन बराय ज़ीसतन अस्त न ज़ीसतन बराय ख़ुरदन" (खाना जीने के लिए है, न कि जीना खाने के लिए।) और ये वह प्वाइन्ट (Point) है जहाँ से इस्लाम और माददीयत (वस्तुवाद) में अलगाव होता है क्योंकि माद्दीयत माद्दे (Matter) की तरक़्क़ी को असली मक़सद बताती है और इस्लाम ने जिस्म के पालने पोसने को भी ज़रूरी समझा है मगर इसलिए कि रूह का उससे लगाव है और रूह का बाक़ी रहना और उसकी तरक़्क़ी इस पर निर्भर है और इस लेहाज़ से

माद्दी जरूरतों (Physical Requirements) को पूरा करना भी रूह की ही वजह से है और इस वजह से इस आयत *"मा ख़–लक़्तुल् जिन्–न वल इन्–स इल्ला लियाबुदून"* में जो इबादत को 'मक़सद' बताया गया है वह खाने–पीने, सोने, आराम करने को भी अपने घेरे में ले लेता है जबकि उनका मक़सद सिर्फ़ मौज मस्ती और आराम की चाह न हो बल्कि उसके आगे कुछ और हो, यानि जिस्म को फ़र्ज़ कर्त्तव्य पूरा करने के क़ाबिल रखना जो मानवता का 'मक़सद' है।

bLyke usekn~nhft Unxhdkfdl &fdl rjg [k;ky j[kkgS

मालूम होना चाहिए कि जो चीज़ खुद अपने आप में पसन्द हो उसका दूसरों के कारण होना भी पसन्द होगा अगर माददी ज़िन्दगी तज देना खुदा के यहां रूहानी तरक़्क़ी के लिए चहीता होता तो जान का लेना (हत्या) कोई जुर्म न होता क्योंकि इस ज़रिए से उस आदमी को उस रूहानी तरक़्क़ी के दर्जे पर पहुँचाते हैं जो माद्दी ज़िन्दगी से रिश्ता तोड़ देने पर निर्भर है हाँलाकि जान का क़त्ल वह बड़ा गुनाह है जिस को शिर्क (खुदा में किसी को साझी बनाना/समझना) के बराबर कहा गया है इतना ही नहीं बल्कि दूसरों की जान की हिफ़ाज़त वाजिब बताई गई है। यहाँ तक कि अगर नमाज़ जैसी अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) इबादत का वक़्त कम हो मगर उस वक़्त कोई डूब रहा हो तो उसको बचाने के लिए नमाज़ का उस वक़्त छोड़ना ज़रूरी है। ये है दूसरे की माद्दी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त। और अपनी माद्दी ज़िन्दगी इसके लिए 'खुदकुशी' (आत्महत्या) को बहुत बड़ा गुनाह बताया गया है। खुदकुशी में होता क्या है? इसी माद्दी ज़िन्दगी से रिश्ता टूट जाना ? फिर अगर इस्लाम की नज़र में माद्दी ज़िन्दगी की अहमियत न होती तो वह खुदकुशी को गुनाह क्यों कहता? इतना ही नहीं बल्कि शरीयत ने जान की हिफ़ाज़त के लिए अपने हुक्म तक में बदलावों को सहा। 'तक़य्या' क्या है? यही कि जान बचाने के लिए इन्सान बहुत सी उन बातों को करता है या बहुत से उन फ़र्ज़ को छोड़ देता है जिसका छोड़ना आम हालात में जायज़ नहीं था।

कुफ़्र व शिर्क के बोल जबान पर लाना और रसूल[स०] की शान में बेतुके शब्द इस्तेमाल करना यही वह है जिसके बारे में आयत आई है।"

इस आदमी को कोई गुनाह नहीं जो मजबूरी में ऐसा करे मगर उसका दिल ईमान पर टिका हुआ हो।

नमाज़ ऐसी अहम इबादत लेकिन 'तक़य्या' के मौक़े पर वुज़ू हमारे तरीक़े के लेहाज़ से ग़लत हो पाता है। नमाज़ ग़लत तरीक़े से होती है, मगर जायज़ है, ये उस सूरत में जब कि जान की हिफ़ाज़त उस पर निर्भर हो। फिर वक़्त गुज़रने और डर ख़त्म हो जाने पर उन नमाज़ों की क़ज़ा (बाद में पढ़ना) तक भी ज़रूरी नहीं है, अपने वक़्त वह ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ पूरी हो चुकी हैं।

jkstk& अगर ऐसा मौक़ा आ जाए कि आपको सूरज डूबने के वक़्त यानी जब अहले सुन्नत रोज़ा अफ़तार करते हैं उसी वक़्त रोज़ा अफ़तार करना पड़े तो ये रोज़ा जायज़ होगा और फिर उसका रखना और क़ज़ा भी ज़रूरी नहीं होगी।

tdkr %& अगर आपको मोमनीन और मुस्तहक़ लोगों तक पहुँचाने में अपने माहौल की वजह से ख़तरा है और इस लिए वह ज़कात उन मुसलमानों को देनी पड़ती है जो आप के नजदीक सही ईमान से दूर हैं तो तक़य्या की वजह से उन ही को दे देना ज़िम्मेदारी से बरी हो जाने के लिए काफ़ी हो जाएगा।

इसी तरह हज और जिहाद वग़ैरह सारे शरीयत के हुक्म पर उसका असर पड़ता है। जितने निजी गुनाह हैं वह भी इस तक़य्या के तहत जायज़ कहे जा सकते हैं। इसलिए दूसरों का खूँन बहाना किसी तरह भी जायज़ नहीं हो सकता। अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिए दूसरे की जान लेने का कोई, हक़ नहीं है।

क्या इससे बढ़ कर माद्दी ज़िन्दगी का कोई ख़याल हो सकता है। इसके अलावा जिस्म की सेहत (Health) के फ़ायदे के लिए कितना शरीयत के हुक्म में बदलाव किया गया है।

नमाज़ ही को ले लीजिए कि जो अफ़ज़ल इबादत है। इसकी ज़रूरी शर्त पाक है मगर ज़रा सा पानी के इस्तेमाल से नुक़सान का डर हुआ या बीमारी का डर हुआ और पाक होने का फ़र्ज़ बदल गया। गुस्ल या वुज़ू के बदले तयम्मुम का हुक्म हुआ, ये किस लिए ? सिर्फ़ माद्दी जिस्म की सेहत के लिए, खुद नमाज़ में खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा तकलीफ़ हो तो बैठ कर नमाज़ पढ़े। बैठ कर नमाज़ पढ़ने में परेशानी हो तो लेट कर नमाज़ पढ़े।

¼cfd;k ist u0 14 ij——½

इस्लाम के जगमगाते तीन सितारे

vkylt ukc ek§kuk dl5j fu; kt hh l lgc

हज़रात उलमाए केराम, शोअराए ईज़ाम ख़्वातीन व हज़रात!

अभी मेरे एक दोस्त कह रहे थे कि इस्लाम में एक ही खातून ऐसी हैं जिनकी शायरों ने और आलिमों ने तारीफ़ की है। मैं सोच रहा था कि ईसाइयों का यह अक़ीदा कि एक में तीन है और तीन में एक है और जिसके खिलाफ़ जिसको ग़लत साबित करने के लिए मैंने एक किताब भी लिखी है क्या किसी पहलू से यह दुरूस्त तो नहीं? किसी जगह इसका कोई मायने निकलता है कि नहीं निकलता मैं अपने दोस्त की यह बात सुनकर तौहीद (एक) में तस्लीस (तीन) है और तस्लीस में तौहीद पर एक ख़ास अन्दाज़ में एक ख़ास मानी में ईमान ले आया। मुझे यूँ लगा कि जब मेरे दोस्त यह बात कह रहे थे कि जनाबे ज़हरा स0 ही को इस्लाम में वह औरत माना गया है तो मैंने देखा कि जनाबे फ़ातेमा तीन तीन के रूप में मुझे जनाबे खदीजा नज़र आईं और फिर मैंने देखा कि जो तारीफ़े जनाबे खदीजतुल कुबरा की हो रही हैं वह सब जनाबे ज़हरा स0 को पंहुच रही हैं और जो जनाबे ज़हरा स0 की हो रही है वह सब उनको पंहुच रही है फिर मैं यहीं बैठे–बैठे ग़ौर कर रहा था तो मैंने देखा कि जनाबे ज़ैनब भी जनाबे ज़हरा स0 के रूप में हैं जो तारीफ़ जनाबे ज़हरा स0 की हैं वह जनाबे ज़ैनब को पंहुचती हैं और जो जनाबे ज़ैनब की हैं वह जनाबे ज़हरा स0 को पंहुचती हैं तो जनाबे ज़हरा स0 की तौहीद में यह तीन शख़्सियतों की तस्लीस मुझे नज़र आई और इस तस्लीस में मुझे जनाबे ज़हरा की तौहीद नज़र आई और मैं कैसे उसकी यह तौजीह (वयाख्या) न करता क्योंकि मेंरे दोस्त ने तो यह बात करते हुए इस पहलू की तशरीह न की थी और अगर वह यह तशरीह न करते या मुझ तक न छोड़ते कि मैं यह तशरीह करूं तो फिर उन अज़्मतों को कहां ले जाता मैं उन एहसानात को कहां दफ़न करता मैं उन शफ़कतों को कैसे भूलता मैं उस दौलत को कैसे भूलता जिसने इस्लाम को खरीद लिया और मैदाने करबला में जनाबे ज़ैनब अ0 के किरदार को आखिर कैसे भूल जाता जिनके बारे में एक शायर ने कहा और मुझे बहुत पसन्द आया।

जनाबे ज़हरा जवाबे मरयम
जवाबे ज़हरा जनाबे ज़ैनब
जनाबे ज़ैनब के बाद लेकिन
जवाबे ज़ैनब जवाबे ज़ैनब

तो जनाबे फ़ातेमा स0 का जनाबे ज़हरा का ख़ातूने जन्नत का सय्यदा का ज़िक्र जब होगा तो जनाबे खदीजतुल कुबरा का ज़िक्र होगा जनाबे ज़ैनब का ज़िक्र होगा ओर इस्लाम अबदुल अबाद (अनंत काल) तक इन तीन हस्तियों के एहसानात से छुटकारा नहीं पा सकता अगर इस्लाम की तारीख में से इन तीनों पाक शख़्सियतों के एहसानात को हटा दिया जाए तो बाक़ी क्या बचता है मैं नहीं बता सकता।

मुझसे दोस्तों ने कहा कि मैं कुछ कहूं मगर मैं क्या कहूं लोग सरकारे दो अलम फ़ख़्रे मौजूदात सरवरे काएनात इमामुल अमबिया सय्यदुल मुरसलीन ख़ातमुन नबीय्यीन मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमदे मुजतबा स0 के वालेदैन के ईमान होने और न होने की बहस करते हैं ऐसी किताबें लिखी गयी हैं अनगिनत बहसें चलीं हैं। सलफ़ (पूर्वज) से ख़लफ़ (पुत्र) तक मगर मैंने उसे एक नुक़तए नज़र (दृष्टिकोण) से देखा और नुक़तए नज़र यह है कि यह मसला खुद आपने कैसे हल किया खुद सरकारे खातेमुल मुरसलीन ने किस तरह हम तक पंहुचाया और किस खूबसूरत अन्दाज़ में पंहुचाया बाप का साया न था तो जनाबे अबू तालिब अ0 को अपना बाप बनाया और वह मुजस्सम (साकार) इस्लाम बने। क़ुर्आने हकीम कहता है ''एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या है और हम जो

कुर्आन को बरतर मानते हैं हम कैसे यह तस्लीम करें कि जिस खुदा के दीन पर अबू तालिब अ0 ने एहसान किया वह उसका बदला एहसान की सूरत में नहीं देगा। इस तरह उनको अपना बाप बनाकर जनाबे अब्दुल्लाह के ईमान का मसला भी खुद आपने हल कर दिया अबू तालिब अ0 आपके बाप हैं उनके ईमान में किसी मोमिन को शक नहीं, उनके ईमान में मोमिन को शक नहीं हो सकता।

मैं तो यह मान मान सकता हूं कि उन हदीस बयान करने वालों से ग़लती हुई जिन्होंने वह हदीसें लिखी वह हदीसे पंहुचायी या यूं कहिये कि बनाईं। यह मैं नहीं कह सकता किसने बनायी मैं यह मान सकता हूं कि उनसे ग़लती सरज़द हुई वह ग़लती पर थे लेकिन मैं एक लम्हे के लिए ईमाने अबू तालिब अ0 में शक नहीं कर सकता वैसे भी फ़र्ज़ कीजिए अगर कोई शख्स ज़ने ग़ालिब (अनुमान) से किसी ग़ैर मोमिन को मोमिन मान ले तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह तआला उस पर कोई जवाबदही नहीं करेगा लेकिन अगर किसी मोमिन को कोई आदमी काफ़िर क़रार दे बैठा तो खुद उसके ईमान की ख़ैर नहीं। इस तरह वालिद की जगह जनाबे अबू तालिब अ0 को वालिद बनाकर खुद ईमाने अब्दुल्लाह का मसला भी हल कर दिया और जब हज़रत ख़दीजतुल कुबरा की वफ़ात हुई। सय्यदा ने घर संभाल लिया। बचपने ही में घर संभाल लिया। बाप की खिदमत में दिन रात एक कर दिये तो सरकार ने फ़रमाया और वह बात फ़रमाई जो किसी के लिए आपने कभी नहीं फ़रमाई थी और किसी के लिए जिसका तस्सव्वुर (कल्पना) नही किया जा सकता फ़रमाया उम्मेअबीहा तुम अपने बाप की मां हो। उम्मेअबीहा सय्यदा स0 के बारे में इरशाद फ़रमाया और गोया इस तरह अपनी वालेदा के ईमान का मसला हल कर दिया कि जिस तरह ईमान में मेरी बेटी सय्येदतुन निसा (औरतों की सरदार) हैं खातूने जन्नत हैं, उसी तरह हज़रत आमना का मर्तबा है तो जिस तरह मेरी बेटी का ईमान मुसल्लम है उसी तरह मेरी मां का ईमान भी मुसल्लम है।

हज़रात! लोग आज मसावात (बराबरी) की बात करते हैं और जब हम मसावात की बात करते हैं तो कहते हैं कि यह बाहरी नज़रिया है जिसे दरामद (आयात) किया जा रहा है किसे ख़बर कि जिसकी आस्तीन में खुद आफ़ताब आलमताब होगा वह दूसरे टिमटिमाते हुए दिये को क्यों रश्क व हसद की नज़र से देखेगा जिस मज़हब के पास खातूने जन्नत की काएम की हुई मसावात (बराबरी) हो। जिन्होंने अपनी कनीज़ फिज़्ज़ा मगर हमारे लिए लायक़े एहतेराम व अज़मत और हमारी मालेका के साथ यह मामला रखा कि एक दिन घर के काम वह करें और एक दिन खुद आप करें उसे आखिर इस दौरे मआशियात (आर्थिक युग) के नज़रिय–ए–मसावात से डरने की क्या ज़रूरत है ज़माना बलन्द हो कितना बलन्द होगा, जितना भी बलन्द होगा वहां इख़्तेताम (अन्त) करेगा जहां से खातूने जन्नत की मसावात की शुरूआत होगी। अब उसके बाद यह शरमाना यह झिझकना यह मसावात के उसूल को नज़रिये को कुबूल करने से हिचकिचाना मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि लोग अपने ही घर की चीज़ को अपने ही इम्तेयाज़ (विशेषता को अपनी ही खुसूसियत को ग़ैरों के सर क्यों मन्ढ़ रहे हैं ग़ैरों का क्रेडिट क्यों बना रहे हैं ग़ैरों के सर पर यह सेहरा क्यों बांध रहे हैं। एक दोस्त ने और एक बात कही।

मैं तो कुछ सोच के न आया था मैं तो अशआर (कविताएं) सुन सुन कर यहीं बैठ के सोंचता रहा और अशआर वहीं होते हैं जो एहसास मे तमव्वूज (उछाल) पैदा कर दे इंसान को सोचने पर मजबूर कर दे फिर वह अशआर अफ़कार (विचार) बन जाते हैं मैं यही सोच रहा था कि एक दोस्त ने कहा कि अहलेबैत का नुक्तए मरकज़ी जनाबे ज़हरा स0 की ज़ात है यह शायरी नहीं ऐन हक़ीक़त है इसलिए कि खुद सरकार ने भी यही फ़रमाया था कि आप के बहुत से इरशादात हैं जिनका असल और खुलासा यह है जिनका निचोड़ यह है जिनमें तकरार यह है कि रसूल अ0 और फ़ातेमा स0, अली अ0, हसन अ0 और फ़ातेमा स0 हुसैन अ0 और फ़ातेमा स0 इसलिए कि यह अगर मरकज़ न होता तो रसूल के अतवार (किरदारों) को आगे कौन पंहुचाता यह ज़ात अगर न होती तो रौशनियों का अक्स करबला के मैदान में कहां पड़ता इसलिए अहलेबैत अ0 का मरकज़ी नुक़ता खातूने जन्नत हैं और जिसने कहा ठीक कहा। तारीख शाहिद है कि जो फ़रज़न्द भी आपकी आग़ोशे शफ़क़त में मचल कर निकला वह ऐसा बना जिसके बारे में कहा गया कि–

शगुफ्ता गुलशने ज़हरा का हर गुलेतर है
किसी में रंगे अली है किसी में बूए रसूल

हाज़रीने किराम! (उपस्थित सज्जनो) मुझे एहसास है कि आज मैं बिल्कुल ग़ैर मरबूत कलाम (असम्बन्धित बात) पेश कर रहा हूं जैसे एक ग़ज़ल में अलग शेर होते हैं मैंने आज की गुफ्तगू (बातचीत) के हर मोड़ पर अलग अलग बात कही है अलग अलग नुक़ता बयान किया है मैं जानता हूँ मुझे ख़त भी मिले जब मैं यहाँ आ रहा था कि यह जलसा जन्नतुल बक़ी के बारे में हो रहा है इस वास्ते से इस निस्बत से जो कुछ लिखा गया होगा जो कुछ कहा गया होगा आप जानते हैं उसके दोहराने और बयान करने की ज़रूरत नही काश मैं इतना आज़ाद होता कि मैं कह सकता लेकिन मैं आपको एक वाक़ेआ सुनाऊँ मैंने बचपन में बहुत सी चोरियां की होंगी कुछ याद आती है कुछ याद नहीं आती लेकिन एक चोरी मैंने शऊर (विवेक) में की जवानी में की जान बूझकर की सोच समझ कर की और इस चोरी पर मुझे बड़ा फख्र है मुझे इस पर निदामत कभी नही हुई कभी शर्मिन्दगी नहीं हुई मैंने चन्द साल पहले मोची दरवाज़े में उसका इज़हार भी किया था उस समय मैंने कुछ बातें और भी कहीं थी मैं उन पर क़ायम हूं मगर उनको दोहरा नहीं सकता सिर्फ इशारा ही कर सकता हूं सिर्फ इसलिए ताकि दोस्त यह समझ लें कि फर्ज़ अदा करने से ग़ाफिल नहीं हूं मैं जब मदीनतुर रसूल स0 में हाज़िर हुआ और आप को वह बहसें याद होंगी इमाम इब्ने तिमीया ने यह बहस की है और इमाम उनको मैं अहले इल्म में से होने की वजह से कहता हूँ। इस इमामत का मक़ाम और है जो ख़ानदाने नबूवत का खासा (विशेषता) है कि हाजी जो इरादा लेकर निकलता है नियत कर के निकलता है ज़ियारते रौज़–ए–रसूल स0 की, उसका हज हो जाता है यह तो ख़ैर उलमा की बातें है एक आमी हूँ और मैं अपनी बात सुना रहा हूँ कि मैंने जब हज का इरादा किया मदीनतुर रसूल स0 मेरे पेशे नज़र था और मैंने एक जगह लिखा है कि मैं मक्काए मुकर्रमा के बाद जब मदीनतुर रसूल स0 जाता हूँ तो मुझे यूँ लगता है कि जैसे मक्कतुल मुकर्रमा की हाज़री वुज़ू है और मदीनतुर रसूल स0 की हाज़री नमाज़, लेकिन जब मैं मदीनतुर रसूल स0 का क़सद करता हूँ ओर इरादा करता हूँ और मेरा खुदा गवाह है कि ऐसा कहते हुए मुझे किसी की तारीफ की तमन्ना नहीं है वेसे भी इस घर की तारीफ़ करने वालों को दाद कम मिलती है बेदाद ज़्यादा।

उस ख़ानदान से ताल्लुक बांधने वालों के लिए कभी ऐसा नहीं हुआ कि हटो बचो की सदाएं सुनी गयीं हों। तो मैं कह रहा था कि जब मैंने मदीनतुर रसूल का क़सद किया है तो मेरे पेशेनज़र दो बातें थीं एक दरबारे रसूल स0 में हाज़री और दूसरी जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार पर हाज़री।

और जब मैं पहली मरतबा पंहुचा जन्नतुल बक़ी में हाज़िर हुआ बहुत मैंने कोशिश की कि किसी तरह यहां से चोरी करूँ मज़ार के इर्द गिर्द जो शिकस्ता रोड़े छोटे–छोटे कंकर पत्थर पड़े हैं एक आध मैं किसी तरह सिपाही की नज़र बचाकर जेब में रख लूँ उस समय मुझे मौक़ा न मिला क्योंकि पहरा बड़ा सख़्त था और हम सरकारी ज़रिये से गये हुए थे हमारे साथ निगेहबानी करने वाले भी मौजूद थे फिर ऐसा हुआ कि मैं एक मरतबा लन्दन से आते हुए उमरा करने गया अकेला था कोई सरकारी निसबत न थी मैं पहुंचा तो जन्नतुल बक़ी में कोई न था मैं था जनाबे सय्यदा स0 का दरबार था दूर सिपाही खड़ा था मैंने जाते ही एक छोटा सा पत्थर जनाबे सय्यदा के मज़ार से उठा कर अपनी जेब में डाल लिया आप यक़ीन मानें कि आज अगर अपनी दौलत में मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ है तो जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार का वह पत्थर है मैं नही बताना चाहता था आज से चन्द साल पहले मैंने बताया था उस समय मैं बता सकता था आज नहीं बता सकता कि जनाबे सय्यदा स0 की क़ब्र ने मुझसे क्या कहा मुझसे क्या बात की। कुछ कहा मैंने कानों से सुना यह इस तरह की सरगोशी (फुसफुसाहट) तो नहीं थी। मेरे मुंह में ख़ाक यह तशबीह (तुलना) तो नहीं हो सकती कि जैसे जनाबे सय्यदा स0 के वालिदे माजिद ने दुनिया से जाते समय जनाबे सय्यदा स0 के कान में सरगोशी की थी लेकिन किसी न किसी अन्दाज़ की सरगोशी जनाबे सय्यदा स0 के मज़ार से मेरे कानों में पंहुची कोई हुक्म मिला कोई बात कही गयी मैं उससे ग़ाफ़िल नहीं हुआ।

(इमामिया मिशन का प्रकाशन नं0 865)



ख़ानदाने इजतेहाद - एक तआरूफ़

डॉ० अमानत हुसैन नक़वी, मशहूर व मारूफ़ शख़्सियत डॉ० सै० रज़ा हुसैन नक़वी रम्ज़ के फ़रजन्द और खुद भी एक्यूपंक्चर के कामियाब डॉ० हैं साथ ही अपने वालिद की तरह क़ौमी मसाएल से भी राबेता रखते हैं। आप आल इण्डिया अली कांग्रस लखनऊ के सद्र और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के एज़ाज़ी कारकुन हैं क़ौमियात में भरपूर दख़ल रखते हैं। इस मज़मून निगार को ख़ानवाद-ए-दीवान नासिर अली ही के नुमाइन्दे की हैसियत से नहीं बल्कि ख़ानवाद-ए-इदारा-ए-इस्लाह खुंजवा बिहार बल्कि खुद बिहार के नुमाइन्दे की हैसियत से देखकर इस मज़मून के मुन्दरजात को देखना मुनासिब होगा। नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन को मौसूफ़ से बड़ी उम्मीदें हैं।

इदारा

ख़ानदाने इज्तेहाद वो ख़ानदान है जिसके चश्मो चराग़ गुज़िश्ता आठ नस्लों से हिन्दुस्तान बल्कि बर्रे सग़ीर की इल्मी, मज़हबी अदबी और मआशेरती फ़िज़ा को मुतास्सिर करते रहे हैं। यही ख़ानदान था। जिसके मूरिसे आला ने हिन्दुस्तान में इज्तेहाद का संगे बुनियाद रखा ग़ुफ़रानमॉब की दुआ कि मेरे ख़ानदान में क़यामे क़यामत तक इज्तेहाद बाक़ी रहे कम से कम आज की तारीख़ तक हर्फ़ ब हर्फ़ सही होती नज़र आती है। उन्होंने ही हिन्दुस्तान में पहली बार नमाज़ें जुमा व नमाज़े जमाअत का क़याम किया और बर्रे सग़ीर की अज़ादारी को वह शक्ल दी जो आज नज़र आती है।

जैसा कि मेरे अज़ीज़ मौलाना जाबिर जौरासी साहब ने मासिक इस्लाह के मरजइयत नम्बर जून - अगस्त 2012 में मौलाना मोहम्मद अहमद नौगांवी का तवील मज़मून हज़रत ग़ुफ़रानमॉब की तारीफ़ और तौसीफ़ में प्रकाशित किया है जिसमें मौलाना आग़ा रूही साहब के अज्दाद में से अल्लामा किन्तूरी का बयान बहुत ही अहमियत का हामिल है।

''आपकी वेलादत शबे जुमा 1166 हि० में बमुक़ाम नसीराबाद ज़िला रायबरेली में हुई, वरसतुल अम्बिया में है कि जब आप पैदा हुए तो उस मकान में एक नूर सातेअ हुआ। नुजूमुस्समां में है कि क़ुतुबे उलूमे अक़्लिया फ़ोज़लाए हिन्द मसलन सन्दीले में मुल्ला हैदर अली पिसर मुल्ला हम्दुल्लाह सनदेलवी से और इलाहाबाद में रहकर सैय्यद गुलाम हुसैन दकनी से पढ़ी फिर रायबरेली में मौलवी बाबुल्लाह शागिर्दे अर्शद मुल्ला हम्दुल्लाह मम्दूह से पढ़ीं। और फिर फैज़ाबाद होते हुए लखनऊ तशरीफ़ लाए और नवाब सरफ़राज़ुद्दौला मिर्ज़ा हसन रज़ा खान साहब की इम्दाद से बराहे सिन्ध ज़ियाराते मशाहिदे मुक़द्दसा से मुशर्ररफ होकर कर्बला-ए-मुअल्ला में आक़ा बाक़िर बहबहानी और आक़ा सैय्यद अली तबातबाई और आक़ा सैय्यद महदी मूसवी शहरिस्तानी से और नजफ़े अशरफ़ में हज़रत बहरूल उलूम आक़ा सैय्यद महदी तबातबाई यज़दी से तहसीले उलूमे फ़िक़्ह व हदीस व उसूले फ़िक़्ह वग़ैरह फ़रमाया और 1194 हि० में ज़ियारते मशहदे मुक़द्दस से मुशर्ररफ हुए और वहां जनाब सैय्यद महदी बिन सैय्यद हिदायतुल्लाह अस्फ़हानी की ख़िदमत में रहकर कस्बे इफ़ादात फ़रमाया और उन्हीं बुज़ुर्गों ने इजाज़ा हाए इज्तेहाद दिये और हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। आपका फ़ज़लो कमाल व उलूवे मरतबत व इज्लाल बयान से बाहर है। फ़क़त यही काफ़ी है कि हिन्दुस्तान में दीने इस्लाम आपके ही वजूदे ज़ीजूद से पाया जाता है। शज़रूल अक़ियान में है कि आयतुल्लाह फ़िलआलमीनल्लज़ी अहियद्दीने फ़िद्दयारिल हिन्द वतमस्सा आसार आसारूल बदअ वलेजाहेलिय्यतो मौलाना अस्सयिद दिलदार अली अन्नसीराबादी''

अहले इल्म पर क्या जोहला पर भी आपका एहसान है जैसे हज़रत अली अ० की तलवारे आबदार ने सरकशाने अरब को ज़ेर कर दिया और लातो उज़्ज़ा व मिनात तीनों को ताक़ हाए हरम से मुंह के बल गिरा दिया ऐसे ही हिन्दुस्तान में अगरचे बराए नाम तशय्यो था मगर कहीं नश्श-ए-भंग नोशी, कहीं अहमद कबीर की गाय, कहीं सद्दू का बकरा, कहीं मीरा जी के गुलगुले, होते थे। यहां भी दिलदार अली रह० की सैफ़े क़लम ने हिन्दुस्तान कि जो कुफ़्रिस्तान था दारूल ईमान बना दिया। आपके इस खुलूस का असर है कि जो जा बजा इस ज़मान-ए-पुर आशोब में फिर कर दुश्मनों में रहकर अरबो

अजम का सफ़रे दूर दराज़ करके उलूमे दीनिया हासिल करके तहते कुब्ब-ए-अबी अब्दिल्लाहिल हुसैन जो दुआ मांगी थी कि मेरी औलाद में ता ज़हूरे क़ाएमे आले मुहम्मद अ० इल्मे दीन क़ाएम रहे सो बेहम्दिल्लाह अब तक है और इन्शाअल्लाह रहेगा और आपका ख़ान्दान 'ख़ान्दाने इज्तेहाद' के नाम से क़ायम हो गया।.........

अख़बारे इमामिया लखनऊ में अल्लामा कन्तूरी का मज़मून छपा है जिसका खुलासा ये है कि कोई शिया जाहिल हो या आलिम इन्कार नहीं कर सकता कि जनाबे ग़ुफ़रानमॉब रह० ने अपनी जान जोखम उठाकर इराक़ से इजाज़ात लाए और रोवसाए अवध को राम करके दीने हक़ की इशाअत में लाखों रूपया खर्च कराके हज़ारहा नहीं तो सदहा उलमा-ए-दीन बनाए। बिला शुब्हा हिन्दुस्तान में इस हमारे हादिये दीन ने वो काम किया जो मदीने में उनके जद्दे नामदार ने। मेरे एक बुज़ुर्ग रसूलपूरी जो आपके सफ़रे इराक़ में रफ़ीक़ थे उनकी चश्मदीद हिकायत जिसको हमारे बुज़ुर्गाने ख़ान्दानी हमेशा विर्दे ज़बान रखे थे, कहते हैं कि जब हमको नजफ़े अशरफ़ में माहे सेयाम की शबे क़द्र हुई तो जनाबे ग़ुफ़रानमॉब ने हमको आमाले शबे क़द्र पढ़ाये और खुद भी पढ़े और अहयाये शबे क़द्र किया और फ़रमाया कि देखो जब एक उमूदे नूर कुब्ब-ए-मुबारक से लेकर आसमान तक नज़र आये तो वही अलामत शबे क़द्र की पूरी है और इस्तेजाबते दुआ का वही वक़्ते मौऊद है अगर मैं सो जाऊं तो मुझे जगा देना और तुम सो जाओगे तो मैं तुमको जगा दुंगा। इत्तेफ़ाक़न जनाबे ग़ुफ़रानमॉब की आंख लग गयी और वो नूर सैय्यद साहब को नज़र आया तो फ़ौरन जनाबे ग़ुफ़रानमॉब को जगा दिया आपने फौरन वुज़ू फ़रमाया और मसरूफ़े दुआ हुए और ये भी दुआ की कि खुदा वन्द!! बेहक़्क़े साहबे क़ब्र, मेरी औलाद से ता क़यामत इल्मे दीन न जाये यही दुआ ऐसी मुस्तजाब हुई कि जिसका असर क़यामत तक के लिए आपकी औलाद में इन्शाअल्लाह तआला बाक़ी रहेगा और हमारा ईमान इसी पर है। सैय्यद साहब ने दुआ की खुदा वन्दा रसूलपूर में बारापट्टी में सिवाय मेरी पट्टी के और कोई शरीक न रहे जनाबे ग़ुफ़रानमॉब ने एक दो हथ्थड़ उनको मारा कि ऐ कम्बख़्त ये क्या दुआ मांगी सैय्यद साहब बोले तुम ज़मींदारी का मज़ा क्या जानो, मुल्ला आदमी लड़के पढ़ाने का तुमको मज़ा है ज़मींदारी की जड़ पताल में होती है जैसे दूब की जड़।...... इस ख़ान्दाने हिदायत के दुश्मन बदख़्वाह और हमेशा रूसियाह रहेंगे.............. "

इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने हिन्दुस्तानी अवाम को मज़हब और अज़ादारी की तरफ़ मायल किया। इन्हीं का असर-ओ-रूसूख था। कि शायद हिन्दुस्तान में पहली बार नवाबीन ने आलीशान महल तामीर करने की जगह वह इमामबारगाहें और मस्जिदें बनवाईं जिन पर लखनऊ और दीगर मक़ामात को आज भी नाज़ है। इसमें कोई दो राय नहीं कि लखनऊ से उठने वाली 'या हुसैन' की सदा ने तमाम हिन्दुस्तान की फिज़ा को मोअत्तर कर दिया। यहां से ताज़ियादारी का रिवाज जो कायम हुआ तो ग्वालियर, कलकत्ता, बिहार और गोलकुण्डा की तरह सैकड़ों जगह के हिन्दु तक ताज़िए रखने लगे। यहां के मदरसों और इल्मी माहौल का असर तमाम हिन्दुस्तान के इल्मी, मज़हबी, अदबी और मआशिरती माहौल पर पड़ा। यहां तहज़ीब की जो नींव डाली उसकी झलक आज भी देखने को मिलती है।

ख़ानदाने ग़ुफ़रानमॉब के अफ़राद की काविशें और कामियाबियां कुर्बानी और ईसार के बिना हासिल नहीं हो सकती थीं। एक नवाब इनके वाज़ में यह कहे हुए शामिल हुए कि अगर शराब के ख़िलाफ़ बोले तो गला काट देना। जान का ख़ौफ़ होता तो शराब के ख़िलाफ बोलने से परहेज़ करते। लेकिन बोले और नतीजा यह हुआ कि नवाब ने शराब नोशी से न सिर्फ तौबा कर ली बल्कि उनकी नज़र में आपकी इज़्ज़त बहुत बढ़ गयी। इसके बाद पुश्त दर पुश्त इसी ख़ानदान के उलमा नवाबीने अवध के मुशीरे ख़ास रहे। यही सरपरस्ती व निगरानी सबब बने लखनऊ के आलीशान इमामबाड़ों और मस्जिदों की तामीर का।

बेग़मात ने इमामे जमाना की छठी मनाना शुरू की तो इन्हीं उलमा ने फ़तवा दे दिया कि यह हराम है। नतीजतन तोप के सामने बांधकर उड़ा देने का हुक्म सादिर हो गया। लेकिन हक की आवाज़ बदस्तूर उठाते रहे। आख़िर हालात ऐसे बने कि नवाब को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा। अंग्रेज़ों ने 'फूट डालो और राज करो' वाली अपनी नीति पर अमल करना चाहा तो इन्हीं उलमा के फ़तवों ने अवध के हिन्दुओं और मुसलमानों को जोड़े रखा यहां तक कि 1854–55 में ही अयोध्या में मंदिर मस्जिद झगड़ा पैदा करने की कोशिश की गयी लेकिन खानदान के उलमा ने फिरंगीमहल के उलमा के साथ मिलकर उस कोशिश को भी नाकाम कर दिया।

वतन परस्ती ऐसी की अंग्रेज़ों को भी मालूम था कि यही वह दहलीज़ है जहां से जुड़े रहने के सबब अवाम अंग्रेज़ों की मौजूदगी बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे। बेगम हज़रत महल ने तलवार संभाली तो उनकी मुख़्तसर सी सिपाह जेहाद का फ़तवा इसी ख़ानदान के उलमा से लेकर निकली। नतीजतन 1857 के गदर में सारे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों को सबसे भारी

नुक़सान अवध में ही उठाना पड़ा।

आख़िर अंग्रेज़ों की फतेह हुई तो अवध में सबसे भारी कुर्बानी एक बार फिर इसी ख़ानदान के अफ़राद को देनी पड़ी। गुफ़रानमॉब इमामबाड़े से फिरंगीमहल फाटक तक मकानों का सिलसिला था जिसे ख़ानदान के अफ़राद आबाद किए थे। अंग्रेज़ों के ज़ुल्म के आगे बहुत से अफ़राद को दरबदर होना पड़ा। नौबत यहां तक आ गयी कि अंग्रेज़ों ने तमाम मकानात गिरा कर उस पर अपनी महारानी की याद में विक्टोरिया स्ट्रीट बना डाली।

इन सब मज़ालिम के बावजूद हक के लिए आवाज़ उठती रही और इत्तेहाद का पैग़ाम दिया जाता रहा। अंग्रेज़ों ने आसफ़ी मस्जिद को घोड़ों का अस्तबल बनाया तो इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने मुकदमा लड़ा ओर आख़िरकार लंदन तक गए जहां उन्हें कामियाबी मिली और मस्जिद में दोबारा नमाज़ क़ायम हुई और साथ टीले वाली मस्जिद को भी छुड़वाकर अहले सुन्नत की नमाज़ भी क़ायम करवाई। आज़ादी की लड़ाई में भी इस ख़ानदान के उलमा मुस्तक़िल कोशिश करते रहे।

अवध पर क़ब्ज़ा जमा लेने के बाद 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर ज़ोर शोर से अमल शुरू हो गया। खानदान के उलमा के सामने कठपुतली नामनेहाद उलमा खड़े कर दिए गये। यह सिलसिला आज भी जारी है। यह ऐसे अफ़राद थे जो इल्म भी रखते थे, जाकिरी भी करते थे लेकिन माद्दियत में ऐसे गिरफ़्तार थे कि अंग्रेज़ों की मर्ज़ी के हिसाब से हुक्म सुनाते थे और उनकी हुकूत के इस्तेहकाम के लिए कोशाँ रहते थे। हुकूमत के इन दलालों ने लखनऊ की इल्मी और मज़हबी फिज़ा को हर मुम्किन नुक़सान पंहुचाया और आज भी पंहुचा रहे हैं।

ख़ानदाने इज्तेहाद के उल्मा व मराजे जहां बर्रे सग़ीर में इल्मी क़यादत कर रहे थे वहीं तमाम उलूम व फ़ोनून में तसानीफ़ के हमराह अपने आमाल व किरदार से भी रहबरी का काम अन्जाम देते रहे साथ ही मदरसों, किताबखानों, मस्जिदों, इमामबाड़ों, मुसाफिरखानों, यतीमों के लिए गुस्ल खानों और नेज़ दूसरे फ़लाही कामों को इस तरह अन्जाम दिया कि आज तक उनके और उनके असरात के फ़यूज़ जारी हैं।

आज का ख़ानदाने इज्तेहाद

हज़रत गुफ़रानमॉब की दुआ कि उनकी "नस्ल में क़यामे क़यामत तक इल्म बाक़ी रहे" में इतनी तासीर थी कि आज आठ, नौ नस्लें गुज़र जाने के बाद भी उस दुआ का असर देखा जा सकता है। आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना काज़िम नक़वी, अल्लाह उन्हें तवील उम्र अता करे, आज हिन्दुस्तान में शियों के सबसे बड़े आलिम और क़ाबिले तकलीद मुजतहिद हैं। नजफे अशरफ़ में सालहा साल तहसीले इल्म में गुज़ारने के बाद वह हिन्दुस्तान वापस आए तो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से मुनसलिक हो गये जहां से डीन थियालोजी डिपार्टमेन्ट के ओहदे पर रहते हुए सुबुकदोश हुए। अपने बड़े भाई सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी की तरह मौलाना काज़िम नक़वी को भी तकरीर और तहरीर दोनों पर क़ुदरत हासिल है। उन्होंने कई किताबें तहरीर कीं जिनमें ज़्यादा अभी मंजरे आम पर आना बाक़ी हैं।

ख़ानदान के एक और फ़र्द जिन्हें अल्लाह ने न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में इज़्ज़त से नवाज़ा वह डाक्टर कल्बे सादिक़ नक़वी हैं। हिन्दुस्तान में कौम के अफ़राद की बदहाली डाक्टर कल्बे सादिक़ को चैन से बैठने नहीं देती। इल्म की तरफ़ अवाम को रागिब करना उनका मुस्तक़िल शेवा है। यही सबब है कि उन्होंने युनिटी पब्लिक स्कुल और मदीनतुल उलूम जैसे इदारे बना कर कौम के सुपुर्द कर दिए जहां से मुस्तक़िल तौर पर कौम के बच्चों को इल्म दिया जा रहा है। सेहत के मैदान को भी डाक्टर कल्बे सादिक़ ने अछूता नहीं रहने दिया। लखनऊ को इरा मेडिकल कालिज उनकी काविशों का जीता जागता नमूना है। इसके क़याम के लिए उनकी कोशिशों का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है कि उन्होंने सालहा साल दुनिया के गोशे गोशे में घूमकर कालिज के क़याम के लिए मदद फ़राहम की और आख़िरकार आज इतना बड़ा अस्पताल कायम हो सका। तौहीदुल मुस्लमीन ट्रस्ट दुनिया भर के मोमिनीन से पैसा इकट्ठा करके हिन्दुस्तान में ग़रीबों के इलाज पर खर्च कर रहा है।

मौलाना काज़िम नक़वी के छोटे भाई आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना बाक़िर नक़वी दुबई में मुक़ीम हैं और वहां रहते हुए फरोग़े इल्म और तदरीस की जिम्मादारी निभा रहे हैं। हिन्दुस्तान में कौम के मआशी हालात को सुधारने के लिए आप भी हत्तलइमकान कोशां रहते हैं। मौलाना बाक़िर नक़वी को भी तहरीर और तकरीर दोनों पर क़ुदरत हासिल है। आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं और अरबी व उर्दू में बहुत सी किताबें ग़ैर मतबूआ हैं।

सैय्यदुल उलमा के फ़रज़न्द डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी गुफ़रानमऑब से सातवीं पुश्त में हैं। उनका शुमार इस वक़्त हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बड़े दानिश्वरों और मज़हबीस्कालरों में किया जाता है। उनकी बेशुमार किताबें न सिर्फ अंग्रजी और फ़ारसी में बल्कि दुनिया की कई बड़ी ज़बानों में छपीं हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के थियोलाजी डिपार्टमेंट

में आप इस वक्त डीन हैं। आपकी आमद ने इस डिपार्टमेन्ट की फआलियात में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का यह डिपार्टमेंट सेमिनारों और मज़हबी प्रोग्रामों की सरगरम आमाजगाह बना हुआ है।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के चश्मों चिराग़ हुज्जतुल इस्लाम वलमुसलिमीन मौलाना कल्बे जवाद साहब बिला शुब्हा पूरे हिन्दुस्तान में शियों के कायद के तौर पर जाने और माने जाते हैं। आप एक अच्छे जाकिर और हक परस्त आलिम हैं जो क़ौमी उमूर से मुताल्लिक मुआमलात में मुसतकिल पेश पेश रहते हैं। इस्लाम दुश्मन अनासिर की कौम में इंतेशार पैदा करने और अंग्रेज़ों की 'बांटों ओर राज करो' की नीति की पैरवी की हर मुम्किन कोशिश के बावजूद आप आज भी हिन्दुस्तान में कायदे मिल्लत के ख़िताब से जाने जाते हैं। आपने तहरीरी मैदान में भी क़दम रखा है और आपकी चन्द किताबें मंज़रे आम पर आईं हैं। आपने अपने वालिद की क़ायम करदा मजलिसे उलमा-ए-हिन्द को मजीद कुव्वत बख़्शी यहां तक कि आपकी दावत पर इस तंजीम से जुड़े उलमा और खुतबा, मुल्क के कोने कोने से इकट्ठा हो जाते हैं। आप न सिर्फ इमामे जुमा मस्जिदे आसफ़ी हैं बल्कि खतीबे मिम्बर गुफ़रानमॉब भी हैं।

क़ाएदे मिल्लत एक अच्छे इन्शा परदाज़ हैं, उनके लिए फ़ाज़िल नबील चौधरी सिब्ते मुहम्मद नक़्वी का एक जुम्ला बहुत काफ़ी है कि ''लखनऊ'' में कल्बे जवाद से गठी उर्दू लिखने वाला कोई नहीं है। आपके कई उनवानों के तहत मुस्तक़िल मज़ामीन कई साल रोज़नामा ''राष्ट्रीय सहारा'' उर्दू में ऐसे पेज पर छपते रहे जिन्हें पूरी दुनिया में पढ़ा गया और पसन्द किया गया।

मौलाना कल्बे जवाद के बरादरे निस्बती प्रोफ़ेसर मौलाना सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर जावेद जायसी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के शोब-ए-कानून से जुड़े रहने के साथ एक अच्छे ज़ाकिरे मिम्बरे रसूल स. भी हैं। आप अपनी ईमानदारी और साफगोई के लिए जाने जाते हैं जो वक़्फ़ बोर्ड के चेयरमैन बनने के बाद आपके फैसलों से अयाँ है। आपका शुमार शहर इलाहाबाद की बाइज़्ज़त और बाइल्म हस्तियों में होता है।

सैय्यदुल उलमा के नवासे मौलाना तक़ी हैदर नक़वी दिल्ली में मुक़ीम हैं और वहां के नामवर समाजी कारकुन, सहाफ़ी और अदीब सैय्यद महमूद नक़्वी मरहूम के फ़रज़न्द हैं। क़ुम से तालीम हासिल कर वापस आने के बाद से आप दफ़्तरे वली-ए-फक़ीह से वाबस्तगी के सबब हिन्दुस्तान भर के उलमा से जुड़े हैं और मुलक भर के क़ौमी और मज़हबी इजलास में शामिल रहते हैं।

डाक्टर कल्बे सादिक़ के फ़रज़न्द डाक्टर कल्बे सिब्तैन नूरी ने कलम का मैदान संभाल रखा है। आप कई किताबें तहरीर कर चुके हैं और हाल ही में डाक्ट्रेट मुकम्मल करके तदरीस के मैदान में आने की तैयारी में हैं। डाक्टर कल्बे सादिक़ के छोटे साहबज़ादे सैय्यद कल्बे महदी नक़वी उर्फ मुन्तज़िर क़ुर्आन मजीद का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो आख़िरी मराहिल में है और जल्द ही नज़रों के सामने आएगा।

मौलाना कल्बे जवाद के भांजे मौलाना आकिफ़ जैदी क़ुम ईरान में आला दर्जे की दीनी तालीम हासिल करने में मशग़ूल हैं। आने वाले वक़्त में हिन्दुस्तान की अवाम आपकी सलाहियतों से यकीनन फैज़याब होगी। मौलाना कमालुद्दीन अकबर के फ़रज़न्द और डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी के दामाद भी कानून और मज़हब की तालीम हासिल करने के बाद अब तहसीले उलूमे दीनिया के लिए ईरान तशरीफ़ ले गये हैं। आने वाले वक्त में हिन्दुस्तान में खानदान बल्कि दारूल उलूम जायस की विरासत को आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान में ही नहीं पाकिस्तान में भी इस ख़ानदान के उलमा कौमी ख़िदमात अंजाम देने में मशग़ूल हैं। इनमें सरेफ़ेहरिस्त अफ़राद में अल्लामा नसीर इज्तेहादी के बाद पाकिस्तान के नामवर शायर इक़्बाल जायसी के फ़रज़न्द और अल्लामा सै० कल्बे अहमद मानी जायसी के पोते मौलाना हसन ज़फर नक़वी साहब का नाम आता है जो पाकिस्तान के मकबूल तरीन उलमा में से हैं। तहरीर और तकरीर दोनों में उनकी ख़िदमात हैं। मौलाना नसीर इज्तेहादी भी पाकिस्तान के एक बड़े आलिम और मुक़र्रिर व ख़तीब थे जो क़ौमी कामों में बढ़ चढ़ कर योगदान दे रहे थे।

सहाफ़त के मैदान में

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब से जुड़े अफ़राद न सिर्फ मज़हबी इल्म में बल्कि मुख़्तलिफ़ दूसरे शोबों में कामियाबी की मंज़िलों पर गामज़न हैं। हिन्दुस्तान में सहाफ़त के मैदान में यह ख़ानदान खासा सरगरम था और है।

गुफ़रानमॉब के बेटों के आहद से अब तक इस ख़ानदान के उलमा व उदबा ने कई प्रेस क़ायम किये और सौ से ज़्यादा माहनामे, जराएद व अख़बारात निकाले।

सैय्यद हुसैन अफ़सर नक़्वी लखनऊ में कौम से ताल्लुक रखने वाले सहाफ़ियों की फेहरिस्त में सबसे बुज़ुर्ग और सीनियर सहाफी हैं। आप न सिर्फ खुद बड़े सहाफ़ी हैं बल्कि लखनऊ में बहुत से सहाफ़ी उन्हें अपना उस्ताद तसलीम करते हैं। मौजूदा वक़्त में आप 'आग अख़्बार के फीचर्स एडीटर हैं। आपकी दोनों बेटियां भी सहाफत के मैदान में हिजाब के साथ तरक़्क़ी की राह पर गामज़न हैं।

शकील हसन शम्सी भी इसी खानदान से वाबस्ता मुल्क के बड़े सहाफियों में से हैं। दुरदर्शन से कई साल तक वाबस्ता रहने के बाद आप कुछ सालों तक उर्दू अख़्बार 'राष्ट्रीय सहारा' से जुड़े रहे। मौजूदा दौर के मसाएल से मुताल्लिक़ आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं। हालाते हाज़ेरा पर आपकी अच्छी नज़र है। सहाफत के साथ आ अच्छे शायर और एंकर भी हैं। आपके फ़रज़न्द भी इलेक्ट्रानिक जर्नलिज़्म में क़दम रख चुके हैं।

सैय्यदुल उलमा के नवासे सैयद अज़ीज हैदर पिछले सतरह सालों से अंग्रेज़ी सहाफ़त से जुड़े रहे हैं। कई सालों तक आपके मज़ामीन हिन्दु, हिन्दुस्तान टाईम्स, हिन्दु बिजनेस लाईन, ट्रिब्यून, बिजनेस वर्ल्ड, हाई टाईम, दैनिक जागरण वग़ैरा अख़्बारों और इंद्रमा, इंण्डिया टूडे प्लस, लाईफ वाच और हदीसे दिल जैसी मैग्ज़ीनों में जगह पाते रहे हैं। हाल में आप रियल न्यूज़ इण्टरनेशनल (आर एन आई) न्यूज़ एजेंसी में एसोसिएट एडीटर हैं जिसके ज़रिए आपके मज़ामीन मुल्क भर में अंग्रज़ी, हिन्दी और उर्दु के 80 से ज़्यादा अख़बारों में छपते रहते हैं। आप अब तक नौ किताबें लिख चुके हैं। सैय्यदुल उलमा के कायम कर्दा इदारे 'यादगारे हुसैनी' के आप सेर्केट्री हैं जिसके तहत आपने रद्दे वहाबियत, कातिलाने हुसैन अ. का मज़हब ओर शहीदे इंसानियत जैसी किताबों को प्रकाशित किया। आप आला सहाफ़ती मेयार बरक़रार रखने वाले ईमानदार सहाफ़ी के तौर पर जाने जाते हैं।

सैय्यद मुहम्मद मेहदी (उर्फी) ख़ानदाने इज्तेहाद से जुड़े सहाफ़ियों की फ़ेहरिस्त को मज़ीद पुरनूर बनाते हैं। आप उर्दु सहाफ़त में अपने आला रिर्पोटिंग मेयार के लिए जाने जाते हैं। आप लखनऊ के कई बड़े अख़बारों से वाबस्ता रहे हैं। यही सब्र है कि लखनऊ के सहाफ़ी हल्क़ों में मक़बूल हैं। फ़िलवक्त आप उर्दु रोज़नामे 'कौमी ख़बर' से वाबस्ता हैं।

हज़रत गुफ़रानमॉब की औलाद में मौलाना सैय्यद हसन नक़वी मरहूम के फ़रज़न्द हुसैन अख़तर नक़वी का नाम भी फ़रामोश नहीं किया जा सकता जो इलेक्ट्रानिक जर्नलिज्म से गुज़िश्ता क़रीब पन्द्रह सालों से जुड़े हैं। इस दौरान आप टाइम्स नाओ, सहारा, न्यूज़ एक्स, आज तक और कई दूसरे टीवी न्यूज़ चैनलों से जुड़े रहे। जनाब साग़र ख़्यामी मरहूम के तीनों फ़रज़न्द मुम्बई में रहते हुए मीडिया के मुख्तलिफ़ शोबों से जुड़े हैं और कामियाबी से हमकिनार हैं।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के अफ़राद सहाफ़त के अलावा भी इल्मी अदबी और मआशरती हलकों में अपनी खिदमात दे रहे हैं। सबका जिक्र कर पाना यहां मुम्किन नहीं।

¼ls uEcj 6 dk cfd;k ------½

यह सब माद्दी जिस्म के चैन आराम का ख़याल नहीं है तो क्या है ? सफ़र में ''क़स्र नमाज़[1] का हुक्म भी सिर्फ़ इसी बुनियाद पर है। ज़ाहिर है कि रूह को सफ़र और पड़ाव के लेहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, ये सफ़र की माद्दी मेहनत कठिनाई ही है जिस के लेहाज़ से फ़र्ज़ में कमी कर दी गई।

नमाज़ की शर्तो में से कपड़ा भी है। रेशम के कपड़े में नमाज़ पढ़ने की मर्दो के लिए मनाही है। मगर जेहाद की हालत में रेशमी कपड़े की इजाज़त दी गयी है, सिर्फ़ जिस्म की भलाई से। क्योंकि रेशम ज़ख़्म के लिए फायदेमंद है। खुद रोज़े का हुक्म जिसे बहुत ज़्यादा इन्सान के माद्दी पहलू से बेयर वाही बताया जा रहा है इसमें किस तरह आदमी के हालात का ख़्याल किया गया है। अगर कोई बीमार हो और नुक़सान का डर हो तो रोज़े के फ़र्ज़ को हटा दिया गया। इसी तरह बड़े बूढ़ों के लिए जिन्हें रोज़ा आम तौर पर कड़ा हो और सहने वाला न हो या वह औरत जो मॉ बनने वाली हो और बीमार, इन सबको इजाज़त दी गयी है कि वह रोज़े को उन हालात में छोड़ सकते हैं। सफ़र की हालत में भी रोज़ा छोड़ देने को कहा गया है ये ईन्सान की मद्दी ज़िन्दगी का ही लेहाज़ नहीं है?

मालूम हुआ कि ये कहना बिल्कल सही नहीं है कि इस्लाम ने माद्दी ज़िन्दगी का कोई लेहाज़ नहीं किया है और रूहानियत की धुन में माद्दीयत से बहुत हद तक बेपरवाही बरती है, ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि इस्लाम ने क़दम क़दम पर माद्दी ज़रूरतों का लेहाज़ किया है।

बेशक वह माद्दी चैन आराम और मज़े व खुशी की इतनी आव भगत नहीं कर सकता कि फ़र्ज़ो की बिल्कुल अनदेखी कर दे और इन्सान को बेलगाम छोड़ दे, वह इस ज़िन्दगी को बिल्कुल कुर्बान (Sacrifice) कर देने का न्योता देता है जबकि किसी ऊँचे मक़सद की हिफ़ाज़त और रूहानियत की तरक़्क़ी जान को जोखिम में डालने पर निर्भर हो जैसे 'जेहाद' की मंज़िल। और इस हद तक कठिनाई सहने को ज़रूरी ठहराया है जो शरीयत के हुक्म पर चलने के लिए नेचर से ज़रूरी है।

बेशक उन शरीयत के हुक्मों. में छिपा है और फ़ायदे बनते है।

¼'kkjh ------½

मुख्य समाचार

; eu esa c e /kekdksa 3 yksxksa dh ekSr

उत्तरी यमन के एक बडे शहर अदन में सुरक्षाकर्मियों को निशाना बना कर किये गये तीन धमाकों में कम से कम तीन की मौत हुई है। मरने वाले लोगों में खुदकश बमबार भी शामिल हैं। पिछले दो साल के दौरान दक्षिणी यमन में जहां धमाके और फायरिंग में सैकड़ों सुक्षिाकर्मी और वहां के रहने वाले लोग मर चुके हैं। तेल की दौलत से मालामाल और तेल के सबसे बड़े एक्सपोर्टर अरब के बग़ल में होने और बहरे अहमर के रास्ते कच्चे माल की लदाई किये जाने वाले महत्वपूर्ण गुजरगाह होने की वजह से यमन में अमरीकी सुरक्षा और खाड़ी अरब देशों के लिए पहली प्राथमिकता है। अलकायदा के यमनी शाख अलकायदा जज़ीरतुल अरब ने इसी महीने कहा था कि सुनआ में विजारत दिफाअ की इमारत पर हमला, जिसमें तकरीबन 50 लोग मारे गये, इसके पीछे उसी का दिमाग काम कर रहा था। वास्तविक इस्लामी दहशतगर्द ग्रुप अंसारूश्शरइया ने अरब बहार से तरगीब पाकर धरने के बीच राजनीतिक हलचल का फायदा उठा कर दक्षिणी इलाकों में कई शहरों पर कबज़ा कर लिया।

bljkby esa gtkjksa vo/kS fuekZ.k eqdEey

फिलस्तीन में इसराईली सरगरमियों और यहूदी आबादकारियों के खिलाफ सक्रिय एक संगठन ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि फिलस्तीनी अथारिटी और इसराईल के मध्य जूलाई 2013 के बाद से जारी तथाकथित शान्ति वार्ता के दौरान इसराईली हुकूमत फिलस्तीनी क्षेत्रों में अवैध मकानों का निर्माण पूरा कर चुका है। इसराईली टेलीवीज़न की रिपोर्ट के अनुसार निर्माण के हवाले से यह आंकड़ा बाईं बाजू की तनज़ीम ''पेश नाव'' ने जारी किये हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि हुकूमत की जानिब से यहूदी बस्तियों का निर्माण की केवल घोषणा ही नहीं की गई अपुति उन घोषणओं पर बाकायदा तौर पर अमल दरआमद किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार पश्चिमी किनारे में स्थापित की गयी यहूदी कालोनियों के विस्तार के लिए जारी हरकत देखी गयी। नॉबलस में बराखा, यतसहार, नखमीनिया, अराईल, ज़हाब और लशीम नामी बस्तियों में सैकड़ों मकानात की तामीर की गयी। और यह कि एक ओर फिलस्तीनी अथारिटी के साथ शान्ति गोष्ठी भी जारी रही और दूसरी जानिब फिलस्तीनियों की जमीन कब्ज़ा करने और उन पर यहूदियों को आबाद करने का सिलसिला भी जारी रहा। अलबत्ता इस्राईल ने इन गोष्ठियों के द्वारा फिलस्तीनी जनता पर 104 पुराने कैदियों को आज़ाद करने का ऐहसान जरूर किया है। इस्राईली अधिकारियों ने इन कैदियों के एक ग्रुप को अमरीका की मदद से किये गये एक समझौते के तहत रिहा कर दिया ताकि सीधे अमन व शान्ति को आरम्भ किया जा सके। इस्राईली शासन ने इन कैदियों की रिहाई की स्वीकृति शनिवार को दी थी परन्तु उन की रिहाई में 48 घन्टे विलम्ब किया गया ताकि प्रभावित लोग यदि कानूनी अपील करना चाहें तो उन्हें अवसर मिल सके।

इन कैदियों ने 1993 से पूर्व हत्या जैसे जुर्म किये थे और यह 91 से 28 साल की जेल काट चुके थे। यह उन 104 कैदियों मे से हैं जिन्हें स्वतन्त्र किये जाने का इस्राईल ने अश्वासन दिया था। अगस्त और अक्टूबर में रिहा किये जाने वाले 52 फिलस्तीनी कैदियों को फिलस्तीनी अध्यक्ष महमूद अब्बास ने हीरो करार दिया था। आठ पुरूषों को रात्रि के समय गज़ा और पूर्वी येरूशलम के चेक प्वाइन्टस की ओर ले जाया गया जबकि 18 कैदियों को पश्चिमी किनारे में रामल्लाह ले जाया गया था। इस्राइल में उपस्थित घर वालों ने कई दिन धरने दिये और सुप्रीम कोर्ट में अपील की कि उनकी रिहाई को रोका जाये। अभूतपूर्व अदालतों ने ऐसी रिहाइयों की अनुमति दी है। इस्राइल मोहकमा पानी सप्लाई के अफसरान ने सैहूनी फौज के साथ अधिकृत पश्चिमी किनारे में नागरिक के घरों में पानी की तलाश के लिए छापे मारे और नागरिकों को मारा पीटा। केन्द्रीय सूचना फिलस्तीन के अनुसार सैहूनी फौज और पानी सप्लाई के कई अफसरान ने एक स्थानीय वकील और सामाजिक कार्यकर्ता के घर पर छापा मारा, घर के प्रांगण और अन्य स्थानों की तलाशी लेने के बाद यहूदी फौजियों ने घर में उपस्थित बहूमूल्य सामानों को भी तोड़ फोड़ दिया। सूत्रों के अनुसार काबिज सैहूनी फौजी स्थानी वकील बहा जियूद से क्षेत्र में पानी के भण्डार के बारे में सवाल जवाब करते रहे और विचित्र तरीके से बहा जियूद के मकान की तलाशी ली। तत्पश्चात कई अन्य स्थानों पर भी छापे मारे गये और लूट पाट की।

अलकुदुस में मकानों को गिराना यहूदी आबादी को विस्तार देने साज़िश है

फिलस्तीनी मन्त्री डाक्टर इस्माईल रिजवान ने अधिकृत बैतुल मक्दिस में फिलस्तीनी नागरिाकों को इस्राईल की जानिब से मकानात के गिराये जाने की ताज़ा नोटिस की भर्त्सना की। उन का कहना है कि सैहूनी शासन बैतुल मुक़द्दस में फिलस्तीनी नागरिकों के मकानात गिरा कर पवित्र शहर में यहूदियों के विस्तारवाद की राह साफ करने के इच्छुक हैं। केन्द्रिय सूचना फिलस्तीन के अनुसार फिलस्तीनी धार्मिक मन्त्रि ने अपने एक बयान में कहा कि मस्जिद अक्सा के दक्षिण में सलवान के मकाम पर फिलस्तीनियों के मकानों के ताड़ने की नोटिस विस्तवारवाद सैहूनी सियासत का का हिस्सा हैं। वह इन एकदामात की भरपूर निन्दा करते हुए आलमी बिरादरी से फिलस्तीनियों को सुरक्षा देने का मुतालबा करते हैं। ड़ा० रिज़वान का कहना था कि सैहूनी हुकूमत बैतुल मकदिस में आबादियाती तवाजुन तबदील करके शहर के ऐतहासिक महत्व और उसका इस्लामी पहचान को तबाह करने का षड़यन्त्र कर रहा है। इस निन्दनीय मकसद को पूरा करने के लिए फिलस्तीनियों से उन के मकानों, भूमि और दूसरे इमलाक को छीनने की पालिसी अपनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि सैहूनी शासन की ओर से बैतुलमकदिस की ऐनुल्लौज़, वादीहलवा, वादीयासूल और रासुलआमूद में फिलस्तीनियों के मकानों को गिराना किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं है। धार्मिक मन्त्रि ने आलमी बिरादरी मुख्यतः इस्लामी दुनिया से बैतुलमकदिस में जारी यहूदी गुण्डागर्दी तुरन्त खत्म करने और फिलस्तीनियों के विरूद्व मुजरिमाना पालिसी की रोकथाम के लिए कड़ी कार्यवाही की मांग की। फिलस्तीन के अधिकृत पश्चिमी किनारे के विभिन्न शहरों में यहूदी कालूनियों में विस्तार का अमल मुसलसल जारी है। सूचना के अनुसार सलफियत शहर के पश्चिम में स्थापित यहूदी कालूनी ''बरोखैन'' के विस्तार के लिए इस्राइली फौज के बिल्डोज़रों ने फिलस्तीनी नागरिकों की जमीन हथियाने के बाद उसे समतल करना शुरू कर दिया है। यहूदी आबादकारी पर नज़र रखने वाले स्थानीय पत्रकार(तजज़िय निगार) खालिद मआली ने मीडिया को बताया कि ''बरोखैन'' कालोनी सबसे पहले यहूदी आबाकारों ने स्वंय निर्माण की थी जिसे इस्राइली शासन की ओर से स्वीकृति प्राप्त नहीं हुयी थी लेकिन सलफैत के क्षेत्रों के आस पास तैनात सैहूनी फौज के क्षत्रिय कमाण्डर जनरल नेटरान आलोन ने इस कालोनी को यहूदी आबादियाती कौन्सिल की निगरानी में कायम यहूदी कालोनी करार दिया। जिसके बाद सैहूनी शासन ने इस कालोनी में 550 मकानों के निर्माण की स्वीकृति दे रखी है। अब इर मकानों के निर्माण के लिए फिलस्तीनो से उनकी जमीन छीनी जा रही है। खालिद अलमआली का कहना था कि मक़ामी फिलस्तीनी किसानों ने सैहूनी फौजियों की ओर से खुदाई और निर्माण के लिए जमीन समतल करते देखा है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यहूदियों ने ''बरोखैन'' का नाम स्थानीय कस्बा 'बरकैन' से लिया है, जिस का मकसद यह साबित करना है कि यहूदी यहां के पुराने नागरिक हैं और वह अपना एक एतिहासिक हक रखते हैं। फिलस्तीन में यहूदी आबादकारी के माहिर औरूलकुदुस मखतूतात विभाग के डायरेक्टर ने खबरदार किया है कि इस्राईल 'अलकुदुस अलकुअरा' (अज़ीम तर अलकुदुस) के जिस जिस निन्दनीय मन्सूबे पर अमलपैरा है उसका मकसद पश्चिमी किनारे के दस फीसद जमीन को भी इस मन्सूबे में शामिल करना है। केन्द्रिय सूचना फिलस्तीन के अनुसार इस्राइल के इस निन्दनीय मनसूबे को पूरा करने में अमरीका के विदेश मन्त्रि जान केरी भी सैहूनी सूबे की भरपूर सहायता कर रहे हैं। उन्होंने अलकुदुस अलकुबरा प्रयोजना के हिमायत की तजवीज भी पेश की है। फिलस्तीनी बुद्विजीवी खलील बफकी ने खबर रिसा एजेन्सी ''कुदुस प्रेस'' को दिये गये एक इन्ट्रव्यू में बताया कि अमेरिकी विदेश मन्त्रि जॉन केरी पश्चिमी किनारे का दस फीसद इस्राईल को देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि इस्राईल पहले ही पश्चिमी किनारे के एक बड़े हिस्से पर काबिज़ है। मगरबी किनारे और बैतुलमुक़द्दस के बीच स्थापित यहूदी कालोनियों 'गोश अत्सयून', 'मआलिया अदोमीम' और 'गुफात जैयू' को एक दूसरे को मिलाकर अलकुदुस अलकुबरा की प्रयोजना तैयार की जा रही है जिसमें दोनों शहरों की हजारों ऐकड़ जमीन पहले ही इस में शामिल की जा चुकी है। स्पष्ट है कि अमेरिकी विदेश मन्त्रि जॉन केरी ने हाल ही में यह तजवीज पेश की थी कि बैतुलमुक़द्दस को फिलस्तीनी सूबा और इस्राईल दानों की साझा तौर से राजधानी करार दी जाये। इसके बदले में इस्राईल को पश्चिमी किनारे में दस फीसद जमीन पर कब्जे का हक दिया जाये। सूत्र के मुताबिक फिलस्तीनी अथारिटी ने अमेरिकी विदेश मन्त्रि की यह तजवीज स्वीकार नहीं की है।